रेखायें मर्यादा की...

मर्यादा ही किसी व्यवस्था की शोभा हुआ करती है, किसी परिवार की प्रतिष्ठा का कारण बनती है, किसी कुल को गायन-योग्य बनाती है और किसी राज्य को उदाहरण-योग्य स्थान दिलाती हैं।

मनुष्य के पारिवारिक और सामाजिक जीवन मं मर्यादा का अपना एक महत्व होता है। मर्यादा केवल संसद में शिष्टता और सम्मान एवं संविधान के अनुकूल व्यवहार को ही नहीं कहते बल्कि घर-परिवार में, व्यापार-कारोबार में, मित्र-मंडली में, अड़ोसी-पड़ोसी में, सगे संबधियों में, देश और प्रदेशों में गोया हरेक कार्य-क्षेत्र एवं संबन्ध-क्षेत्र में मर्यादा पालनीय होती है। यद्यपि मर्यादा कोई 'कानून नहीं और पाप-पुण्य की परिभाषा पर आधारित कोई'आचार-संहिता' भी नहीं परंतु पारस्पारिक सम्बन्धों में कलह-क्लेश की स्थिति को पैदा होने से रोकने के लिए तथा कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए तथा समाज मे तालमेल, सामञ्जस्य, स्नेह और व्यवस्था बनाये रखने के लिए अत्यावश्यक है। सच तो यह है कि अगर मर्यादा बनी रहे तो कानून और दण्ड-संहिता की आवश्यकता ही नहीं होगी और तनाव से बचने के लिए डाक्टर व गोलियों की जरूरत भी नहीं रहेगी, न ही आपस में मनमुटाव, टकराव या भाव-स्वभाव के कारण अलगाव ही पैदा होगा। मर्यादा एक ऐसा कायदा है जिसमें ही फायदा होता है। यह एक दूसरे से सज्जनता और सम्मान से व्यवहार करने का अलिखित समझौता है।

मर्यादा बिना समाज तुच्छ

जैसे किसी मशीन के कल-पुर्जों को सुचारू रूप से चलाने के लिए साफ रखने तथा उन्हें ग्रीज या तेल देने की जरूरत होती है, मानव-समाज में व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को स्निग्ध बनाये रखने के लिए मर्यादा वैसा ही कार्य करती है। सत्यता तो यह है कि मार्यादा के बिना परिवार और समाज में ऐसी किरकराहट पैदा हो जाती है कि जीवन वैसे ही जीने-योग्य नहीं महसूस होता जैसे कि खाने में बार-बार रेंत, कंक्ड, जंतु या किरकिराहट निकलने पर खाने को छोड़ देने के लिए मन करता है। जैसे अंगूरों में ताजगी होने पर भी यदि वे खट्टे हों, खीर अच्छी बनी होने पर भी यदि उसका तला लग गया हो, बर्फी ठीक बनी होने पर भी उसे काई लग गई हो, खाने के योग्य नहीं रहते, वैसे ही जीवन में सुख की सामग्री होने पर भी यदि मर्यादा न हो और उसके स्थान पर अमर्यादा आ गई हो तो यह जीवन तुच्छ, त्याज्य और सड़ा हुआ जैसे लगता है।

यदि एक मनुष्य गोरे रंग का और लालिमा लिये हुए हैं, उसकी मुखाकृति सुन्दर हो, उसने कोट-पेंट और नेकटाई से स्वयं को सुन्दर बना रखा हो परन्तु वह अंदर में मैला, बदसूरत, चरित्रहीन और छिपा हुआ चोर, डाकू या संक्रामक रोग से ग्रसित हो तो वह व्यक्ति हमें भाता नहीं, वैसे ही समाज के विभिन्न स्तरों से यदि मर्यादा चट हो गयी हो तो वह समाज भी कचड़े-कबाड़े का एक ढेर-मात्र ही महसूस होता है या मतलबी, चालबाज और मक्कार लोगों का एक गिरोह मात्र ही महसूस होता है। यदि देखने में सभी तिलकधारी पंडित हों, कंधे पर उन्होंने दोपट्टा डाल रखा हो, हाथ या बगल में पोथी हो, मुख से वे राम-राम बोलें परन्तु मन में उनके मतलक की मूर्ति हो या पैसे की प्रतिमा होतो वह पंडित-मंडहली सुहाती नहीं, न ही उससे कथा सुनने का मन करता है, वैसे ही ऐसे व्यक्ति जो पक्के स्वार्थी हैं और जिनके मन में अपने ही मान-शान की उत्कट इच्छा हो और इसके लिए वे सज्जनता, भद्रता और मर्यादा की हत्या करने को भी उद्यत हो, व समाज के ध्वंस के निमित्त बनते हैं या उसके निकृष्ट बना देते हैं।

मर्यादा के बिना गाड़ी नहीं चल सकती

इस कालेकाल में भी हरेक देश की सरकार में हरेक कर्मचारी या अधिकारी का अपना-अपना स्थान और मान होता है। मंत्री का स्थान अपना, सचिव का अपना, क्लर्क का अपना और चपरासी का अपना। यों तो सभी मनुष्य हैं और उस नाते से सभी के साथ व्यवहार होना ही चाहिए परन्तु जब अधिकारी दफ्तर में आता है तो चपरासी उठ खड़ा होकर नमस्ते करता है और दरवाजा खोल देता है। इसका यह अर्थ नहीं हैं कि अधिकारी अभिमान में आ जाये या चपरासी से डांट-डपट कर बात करें बल्कि इसका इतना भी भव है कि चपरासी आये हुए वरिष्ठ व्यक्ति का आदर करें। यह तो वर्तमान समय की परिपाटी है।देवी-देवताओं की इससे भिन्न हो सकती है, योगी-जनां की भी अपनी प्रकार की मर्यादा हो सकती है परन्तु यदि 'मर्यादा' ही अनुपस्थित हो तो संघर्ष और मन-मुटाव होता है। 'राजा भोज' का स्थान अपना और 'गंगू तेली' का स्थान अपना होता है-इस बात से तो इन्कार नहीं किया जा सकता। मर्यादा के बिना तो रेलगाड़ी पटरी से ही उतर जाएगी और दुर्घटना हो जाएगी। समुद्र यदि मर्यादा छोड़ दे तो नगर और ग्राम डूब जायेंगे और आबादियां वीरान हो जायेंगी। इसीलिए बड़ों और बुजुर्गों ने ध्र्माचारियों और हितैषियों ने मर्यादा से चलने की बात कही है। योगियों की मर्यादा, ईश्वरीय मर्यादा या दैवी मर्यादा तो सभी सभ्याताओं द्वारा पालन की गयी मर्यादाओं से भी श्रेष्ठ होनी चाहिए।

ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार हम सभी आत्माएं भाई-भाई और ब्रह्मावंशी होने के कारण 'भाई-भाई' 'भाई-बहन' अथवा 'बहन-बहन' हैं परन्तु पांचों अंगुलियां यद्यपि होती 'अंगुलियां' ही हैं और जुडी भी एक साथ में होती है तो भी उनका एक ही स्थान व एक ही कर्तव्य नहीं होता। वे भी अपनी-अपनी जगह हाती हैं। काई छोटी होती है , कोई बड़ी और हरेक का कार्य भी अलग-अलग है। कोई अंगुली तिलक लगाने के लिए अथवा अंगूठी पहनने के लिए निमित्त बनती है तो कोइ अंगूठे के रूप में उस व्यक्ति की पहचान के लिए लाखों व करोंड़ों रूपये की लिखत पर निशान लगाने के निमित्त बनहती है। अत: 'भाई-

शेष पेज 11 पर

रायपुर। शान्ति सरोवर में आयोजित ग्राम विकास प्रभाग की वार्षिक सभा का शुभारंभ करते हुए छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री चंद्रशेखर साहु, ब्र.कु.ओमप्रकाश ,ब्र.कु.कमला, संयोजक ब्र.कु. राजु एवं राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.सरला , ब्र.कु. सरिता।

इन्दौर (ज्ञानशिखर)। 'आंतरिक शांति एवं चिंतारहित जीवनशैली' पांच दिवसीय अनुभूति शिविर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए ब्र.कु. सोनाली।

अंबिकापुर। प्रकृति, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए विधायक सिंहदेव, पुलिस महानिरिक्षक श्री लुगकुमेर, ब्र.कु. भारत भूषण, ब्र.कु. विद्या, ब्र.कु. तारिका एवं ब्र.कु. अरूण

जबलपुर, नेपियर टाउन। पाकिस्तान से आये हुये सिंधी समाज के धर्म गुरु के सेवाकेन्द्र अवलोकन के बाद फल भेंट करते हुए ब्र.कु.भावना बहन और डॉ.श्याम रावत।

उज्जैन। 'क्लीन द माईंड ग्रीन द अर्थ' विषय पर आयोजित परिचर्चा में उपस्थित डॉ.नलीनी रेवाडिकर, डॉ.भोजराज शर्मा, समाजसेवी शुभकीण शर्मा, प्रो.मनोज सिसोदिया, के.एल. मलीक एवं ब्र.कु.उषा ।

वालको, (छ.ग.)। हंसदेव थर्मल पॉवर स्टेशन,के. कोरबा पश्चिम सभागार में आयोजित कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए भ्राता ओ.सी.कपिला मुख्य अभियंता ,ब्र.कु.रूकमणी बहन तथा अन्य।

बिलासपुर, (टिकरापारा)। बाल संस्कार शिविर के समापन के बाद ग्रुप फोटो में द.प.म.रेलवे के सीनियर सेफ्टी ऑफिसर एन.एस.भरेल, पुर्व डिप्टी कलेक्टर सुनील टुटेजा, डॉ. राजकुमार सचदेव, गुजराती समाज के अध्यक्ष कांतिभाई जोबनपुत्रा एवं अन्य

कथुआ (जम्मू)। भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष तथा सांसद अनुराग ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कुलदीप, ब्र.कु. सागर तथा अन्य।